P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की समाजवादी विचारधारा में नेहरू का योगदान

हिन्दुराम
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
गायत्री महाविद्यालय,
सांचौर, जालोर, राजस्थान
भारत

सारांश

समाजवाद का लक्ष्य असहाय मानवजाति के एक बड़े हिस्से पर हो रहे शक्तिशाली अल्पसंख्यक शोषक वर्ग के शोषण को समाप्त करना है। यह समाज में उनके प्रति अन्याय और असमानता की भावना को दूर करने का प्रयास करता है। इन लक्ष्यों को पाने के लिए और समाजवादी समाज की स्थापना के लिए कुछ देशप्रेमी बुद्धिजीवी और जुझारू भारतीयों का ध्यान समाजवादी विचारधारा की ओर आकर्षित हुआ। उन में से पंडित जवाहरलाल नेहरू भी एक थे। नेहरू राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन अपनी सक्रिय भूमिका निभाई तो साथ ही समाजवादी विचारों को आत्मसात किया। इन्होने लोकतांत्रिक समाजवाद को अपना लक्ष्य घोषित किया जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को उसकी रूचि एवं योग्यता के अनुसार विविधतापूर्ण ढंग से अपना जीवन व्यतीत करने का पर्याप्त अवसर देना है। अतः भारत की विशिष्ट परिस्थितियों के सन्दर्भ में उन्होंने युगों से शोषित व पीड़ित सामाजिक वर्ग (दलित वर्ग) को विशिष्ट संवैधानिक आरक्षण देने का समर्थन किया, ताकि वे भविष्य में अन्य सामाजिक वर्गों के साथ समान स्तर पर राष्ट्रीय जीवन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। नेहरू ने व्यक्ति की राजनीतिक स्वतन्त्रता पर विशेष बल दिया नेहरू का मत है कि लोकतांत्रिक समाजवाद के अन्तर्गत स्थापित होने वाली आर्थिक समानता का एक प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति को अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता को भोगने की दृष्टि से अधिक सामर्थ्य प्रदान करना है। उनके अनुसार स्वतन्त्रता का अर्थ है वैयक्तिक अभिरूचियों की रक्षा करते हुए सार्वजनिक कर्तव्यों की पूर्ति का अवसर प्राप्त होना। राज्य का दायित्व है कि वह व्यक्ति को अपनी रूचि के अनुसार जीवन जीने का अवसर दे और तब तक व्यक्ति की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं करे, जब तक कि उसकी स्वतन्त्रता अन्य व्यक्तियों की स्वतन्त्रता में बाधक न हो।[1]

मुख्य शब्द : शोषक वर्ग, स्वराज, राजनीतिक स्वतंत्रता, लोकतांत्रिक समाजवाद, आर्थिक समानता, सवैधानिक शासन, अर्थव्यवस्था, आर्थिक असमानता,सहकारी उद्योग, सहकारी साख समितियॉ, लोकतांत्रिक आर्थिक नियोजन,सामुदायिक विकास कार्यक्रम।

प्रस्तावना

स्वतन्त्र भारत के प्रधानमंत्री बनने पर नेहरू के लोकतांत्रिक समाजवाद को अपना लक्ष्य घोषित किया। नेहरू एक नैतिक समाजवादी है उनके लिए समाजवाद का अर्थ एक न्यायपूर्ण आर्थिक व्यवस्था मात्र नहीं है, अपितु यह एक ऐसा नैतिक जीवन दर्शन भी है जो उनकी मानवतावाद तथा लोकतंत्रवाद की अवधारणाओं का अनुपूरक है। वस्तुतः नेहरू के चिंतन में मानवतावाद लोकतंत्र तथा समाजवाद एक दूसरे के साथ घनिष्ठतम रूप में जुड़े हुए हैं। नेहरू का कथन है मैं समझता हूँ कि स्वभाव और प्रशिक्षण से मैं एक व्यक्तिवादी हूं और बौद्धिक रूप से एक समाजवादी। मैं तो वास्तव में उसकी ओर इसलिए आकर्षिक हुआ हूं कि वह अनगिनत लोगों को आर्थिक और सांस्कृतिक दासता के बन्धनों से मुक्त करेगा। नेहरू के लोकतांत्रिक समाजवादी चिंतन पर डिजराइली जार्ज बर्नाड शॉ, बट्रेण्ड रसेल, एटली, लास्की, वैगनर, श्मोलर, नीज जैसे समाजवादियों का प्रभाव पड़ा है।

नेहरू ने समाजवाद की गतिशीलता और मानवतावादी धारणा का समर्थन किया है। नेहरू व्यक्ति की स्वतन्त्रता को समाजवादी व्यवस्था का अनिवार्य लक्षण मानते थे। एक अनुभववादी के रूप में नेहरू ने समाजवाद के स्वरूप के बारे सिद्धान्तों के स्थान पर व्यवहारिक तथ्यों को महत्वपूर्ण माना अतः उन्होंने समाजवाद को एक गतिशील विचार के रूप में ही स्वीकारा। नेहरू ने 20 वीं सदी की राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में समाजवाद को

स्वीकारा जो प्रगतिशील समाजवाद कहलाया जिसे उन्होंने लोकतांत्रिक समाजवाद कहा। जिसमें उन्होंने मानवीय तत्व को पर्याप्त स्थान दिया। नेहरू का मत था कि समाजवाद व्यक्ति के लिए है, व्यक्ति समाजवाद के लिए नहीं। नेहरू ने कहा कि लोकतांत्रिक समाजवाद के समर्थ को समाजवाद के व्यावहारिक लक्ष्यों की प्राप्ति के व्यावहारिक उपायों पर ध्यान देना चाहिए। लोकतांत्रिक पद्धति से ही समाजवादी व्यवस्था की स्थापना होनी चाहिए।

स्वतंत्रता आन्दोलन और नेहरू के समाजवादी विचार

भारत के भविष्य पर विचार करने वालों में पं. नेहरू प्रमुख थे जिन्होंने असहयोग आदोलन के दौरान अपना प्रभाव छोड़ा और इसी आंदोलन काल में 1920–21 उत्तर प्रदेश में प्रतापगढ़, रायबरेली के किसानों के बीच काम करके कृषि समस्याओं पर ज्ञान हासिल किया था। यद्यपि नेहरू गांधीजी के नेतृत्व में विश्वास रखते थे फिर भी वे उनके असहयोग आंदोलन को वापस लेने के निर्णय के आलोचक थे।

इसी दौर में जवाहरलाल नेहरू को 1920 में यूरोप जाने पर अवसर मिला। इस यात्रा के दौरान उन्हें भारत में स्वतन्त्रता संग्राम को बेहतर ढंग से समझने के लिए विश्व के नये विचारों को खोजने का मौका मिला। नेहरू पहले भी ब्रिटेन में अपने छात्र जीवन में फैबियन समाजवाद के विचारों से अवगत थे। इसीलिए राजनीतिक शिक्षा की दृष्टि से जवाहरलाल नेहरू का यूरोप में डेढ़ साल का प्रवास उनके खुद के विकास और कांग्रेस पार्टी की नयी दिशा, दोनों के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ। यूरोप में वे राजनीतिक विचारकों और आंदोलनों के सम्पर्क में आये। उन्हें औपनिवेशिक उत्पीड़न और सामाज्यवाद के खिलाफ फरवरी 1927 को ब्रूसेल्स में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया। वहां वे चीन, मैक्सिको और अन्य दक्षिणी अमरीकी, अफ्रीकी तथा एशियाई देशों के अनेकों प्रतिनिधियों के साथ साथ यूरोपीयन परिवर्तन वादी परम्परा के श्रेष्ठ प्रवक्ताओं से मिले विचारों और अनुभवों के आदान प्रदान से जवाहरलाल पर काफी गहरा असर पड़ा। उन्हें साम्राज्यवाद विरोधी और राष्ट्रीय स्वाधीनता लीग (लीग अगेन्स्ट इम्पीरियालिज्म एण्ड फॉर नेशनल इन्डिपैन्डेन्स) की जो कि ब्रूसेल्स कांग्रेस द्वारा स्थापित एक संगठन था, उन्हें कार्यकारिणी समिति का सदस्य नियुक्त किया गया।

नेहरू की नजरों में साम्राज्यवादी ताकतों के उपनिवेशों में राष्ट्रीय युक्ति के संघर्ष का अर्थ राजनीतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति से कहीं अधिक था। वे स्वयं अनुभव करते थे कि भारत का स्वतन्त्रता आंदोलन वास्तव में विश्वव्यापी साम्राज्यवादी व्यवस्था के खिलाफ हो रही अन्तर्राष्ट्रीय मुहिम का एक अनिवार्य अंग था।[2]

साम्राज्यवाद के विरूद्ध लीग (लीग अगेन्स्ट इम्पीरियालिज्म) में अन्य लोगों के साथ जवाहर लाल ने महसूस किया कि इस अभियान को रूसी क्रांति (1917) की सफलता से भारी प्रोत्साहन और सोवियत यूनियन की बढ़ती ताकत से महत्वपूर्ण समर्थन मिला है। नवम्बर 1927 में उन्होंने सरकारी नियंत्रण पर सोवियत यूनियन का दौरा किया। वे सरकार में किए जा रहे नूतन प्रयोगों और सामाजिक पुनर्निर्माण से बहुत अधिक प्रभावित हुए। हालांकि वे रूस और भारत में राष्ट्रनिर्माण के कार्यों के अंतर के प्रति सजग थे किंतु राष्ट्रवादी राजनीति या ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ अहिंसात्मक जन आंदोलनों की क्षमता में गांधीजी के नेतृत्व पर उनका विश्वास अडिग बना रहा। फिर भी उन्होंने रूसी अनुभवों से सीखा और भारतीय संदर्भ में उनका पूरा उपयोग करने की इच्छा रखी।

1927 में कांग्रेस के भीतर और इसके बाहर भिन्न भिन्न प्रकार के राजनीतिक विचार रखने में बहस छिड़ गयी। इससे नेहरू के उग्र परिवर्तनवादी विचार को बल मिला। भारत सरकार अधिनियम 1919 की शर्तों के अनुसार अंग्रेजी सरकार ने एक कमीशन नियुक्त करने का निर्णय किया और जिसमें केवल ब्रिटेन की संसद के सदस्य ही रखे गये। अंग्रेज इस कमीशन में किसी भारतीय को सदस्य बनाने के योग्य नहीं समझते थे, जो भारत के राजनीति भविष्य के बारे में उन्हें कुछ सुझाव दे सकता। अंग्रेज सरकार यह सिद्ध करना चाहती थी भारतीय अपने लिए संविधान बनाने के अयोग्य हैं। सम्पूर्ण भारत में अंग्रेजों की इस कार्यवाही की सभी तरह से निन्दा हुई। कांग्रेस ने अपने मद्रास अधिवेशन (दिसम्बर 1927) में साइमन कमीशन के बहिष्कार का आहवान किया। जैसे कि 1928 के बाद की घटनाओं से जाहिर होता है कि सरकार के क्रूर दमन के बावजूद बहिष्कार उग्र था। उसकी सफलता में जवाहरलाल और उनके कांग्रेस के सहयोगियों ने विशेष योगदान दिया।[3]

साइमन कमीशन के आगमन तक स्वराज से कांग्रेस नेताओं का तात्पर्य भारत के लिए ब्रिटिश शासन के घेरे में ही एक डोमीनियन स्टेटस अधिराज्य से था। जवाहर लाल नेहरू और उनके जैसे व्यक्तियों के लिए डोमिनियन स्टेटस को भारत की स्वतन्त्रता के समतुल्य मानना न केवल भारत में अग्रेजों की अनिवार्य उपस्थिति को मान्यता देना प्रतीत हुआ। बल्कि उन्हें यह पिछले दरवाजे से भारत का ब्रिटिश साम्राज्यवादी शोषण का स्थायीकरण भी लगा। इस मुद्दे पर विवाद तो तब बढ़ा जब कांग्रेस ने फरवरी 1928 में सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया गया। इसने बर्किनहेड की चुनौती (भारतीय ऐसा संविधान बनाने में असमर्थ है, जो सभी दलों को स्वीकार्य हो।) के जवाब में भारत के लिए संविधान बनाने के लिए मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में एक समिति गठित करने का निर्णय लिया। जब नेहरू समिति ने डोमीनियन स्टेटस की प्राप्ति को ही भारतीय स्वतंत्रता का समकक्ष मानकर संविधान निर्माण का काम शुरू किया तो जवाहरलाल ने उसके विरोध में लोगो को संगठित करने और पूर्ण स्वतन्त्रता या ब्रिटेन के साथ सभी असमान राजनीतिक और आर्थिक संबंधों का विच्छेद करने के लिए समर्थन जुटाना आरम्भ किया जिसमें नेहरू को प्रमुख रूप से सुभाष चन्द्र बोस की सहायता मिली।

अगस्त 1928 में जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस के भीतर एक प्रभावक गुट के रूप में इडिपेंडेंस फार इंडिया लीग की शुरूआत की। इसके लक्ष्य निम्न थे–

1. डोमीनियन स्टेटस की धारणा का विरोधी करना।

2. अंग्रेजों से पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग करना।
3. समाजवादी आधार पर भारतीय गणतंत्र की स्थापना के लिए कार्य करना।

कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (दिसंबर 1928 में डोमीनियन स्टेटस के लक्ष्य को पूर्ण स्वराज में बदलने का प्रस्ताव पेश किया। लेकिन इसे सीमित सफलता ही मिली परन्तु जागरूकता अवश्य उत्पन्न कर सकें। जवाहर लाल नेहरू कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन दिसम्बर 1929 के अध्यक्ष बन गये उन्होंने पूर्ण स्वतन्त्रता को लक्ष्य के रूप में अपनाया। 31 दिसम्बर 1929 की मध्य रात्रि को लाहौर में कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा स्वतन्त्रता का तिरंगा झंडा फहराया गया। 26 जनवरी 1930 का दिन पूरे देश में स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया गया।

नेहरू जिस प्रकार आम जनता से विशेषकर नौजवानों यूथ लीग, हिन्दुस्तानी सेवा दल, नौजवान भारत सभा और स्वयं सेवकों के आन्दोलन द्वारा छात्रों छात्र संगठनो और मजदूरों ऑल इंडिया ट्रेड युनियन कांगेस) से सम्पर्क साधा तथा जिस प्रकार से उन्होंने साम्राज्यवाद की प्रकृति का पर्दाफाश किया, मेहनतकश जनता के प्रति अपनी चिंता व्यक्त की और उन्हें सामाजिक आर्थिक न्याय दिलाने के लिए इच्छा व्यक्त की उससे जनता बहुत प्रभावित हुई। जब सविनय अवज्ञा आन्दोलन व्यापक स्तर पर शुरू किया तब नेहरू जेल में थे अप्रैल–अक्टूबर 1930 तक फिर भी आंदोलन के बढ़ते हुए सामाजिक आधार में उन्होंने अपने ढंग से योगदान दिया और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया। नेहरू ने करांची अधिवेशन, मार्च 1931 में कहा जनता के शोषण को समाप्त करने के लिए राजनीतिक आजादी में करोंड़ों भूखे लोगों की वास्तविक आर्थिक आजादी भी अवश्य शामिल होनी चाहिए। 1931 के मौलिक अधिकारों और आर्थिक कार्यक्रमों को कांग्रेस के समाजवाद की ओर बढ़ने में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में लिया जाना चाहिए।

उत्साही साम्राज्यवाद विरोधियों के रूप में जवाहरलाल गांधी इरविन समझौते के लागू होने से नाखुश थे उन्हें दूसरी गोलमेज कांफ्रेस में कांग्रेस की निरर्थक हिस्सेदारी से कुछ परिणाम निकलने की उम्मीद नहीं थी। उन्हें सविनय अवज्ञा आदोलन मई 1933 के औपचारिक रूप से वापस लेने में भी कोई लाभ नहीं दिखाई पड़ा। इस समय काल में जवाहरलाल ने उत्तर प्रदेश किसान आन्दोलन में सक्रियता दिखाई साथ ही नौजवानों, छात्रों और गरीबों के बीच अपने प्रभाव को बनाए रखा और उन्हें एक परिवर्तनगामी और जुझारू संघर्ष की ओर प्रेरित किया। अन्तोत्गत्वा कांग्रेस के भीतर ही कांग्रेस समाजवादी पार्टी मई 1934 का गठन हुआ इस पार्टी के गठन के पीछे प्रेरक शक्ति जवाहरलाल नेहरू ही थे। फिर भी नेहरू ने न तो इसमें हिस्सा लिया परन्तु इस दल के मुख्य मुद्दों पर अपना समर्थन जताया। नेहरू ने देश के भीतर उठ रहे सामाजिक आर्थिक संघर्ष से जोड़ने की आवश्यकता को तीव्रता से महसूस किया। उन्होंने बदलती हुई अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक स्थिति के अनुसार ही उचित परिवर्तन करने का समर्थन किया।[4]

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ सफलता प्राप्त करने के विचार से जवाहरलाल नेहरू इस बात की वकालत करते रहे कि कांग्रेस के लिए यह आवश्यक है कि वह सभी वर्गों के लोगों और उससे अधिक निम्न स्तरीय लोगों के हितों को लामबद करे। इस साम्राज्यवाद विरोधी जन संघर्ष को सफल बनाने की जरूरी था कि कांग्रेस के पास एक स्वतन्त्र मुक्त और धर्म निरपेक्ष भारत के भविष्य का खाका हो इसलिए कांग्रेस को इन बातों के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।

1. व्यस्क मताधिकार पर आधारित चुनाव
2. सभी भारतीयों के अधिकारों और सुविधाओं हेतु एक संविधान सभा
3. लम्बे अर्से से चले आ रहे सामाजिक और आर्थिक अन्यायों का अंत
4. आधुनिक उद्योगों की सहायता से आर्थिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति।

अतः जवाहरलाल ने भारत में जनतांत्रिक समाजवाद के सिद्धान्तों को अपनाने के लिए लगातार वकालत की और अंत में कांग्रेस को समाजवाद के पक्ष में मोड़ने में सफल हुए। लखनऊ (दिसम्बर 1935), फैंजपुर दिसम्बर 1936 अधिवेशनों की अध्यक्ष चुने जाने के बाद नेहरू ने अपने विभिन्न भाषणों और वक्तव्यों तथा विभिन्न कथनों द्वारा अपने समाजवादी विचारों का खुलासा किया। नेहरू की कई मुद्दों पर सफलता भी मिली जैसे –

भूमि संबंधी प्रश्न पर (फैजपुर कांग्रेस में उदार कृषि कार्यक्रम को तैयार करने में योगदान देकर)

1. संविधान के प्रश्न पर एक चुनी हुई संविधान सभा की मांग को सामने लाकर।
2. नागरिक स्वतन्त्रता के प्रश्न पर (कांग्रेस के प्रांतीय मंत्रिमण्डलों को सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करने का आदेश देकर)
3. साम्राज्यवाद के सबसे घिनौने रूप फासिज्म के खिलाफ विश्वव्यापी प्रचार में स्पैनिश गृह युद्ध में प्रगतिशील शक्तियों का पक्ष लेकर इथोपिया पर इटली के आक्रमण के खिलाफ आवाज उठाकर और जापान द्वारा चीन पर आक्रमण के बाद चीन के लिए राहत कार्यों की व्यवस्था करके।

जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस की राष्ट्रीय योजना समिति के गठन हुआ। इस प्रकार नेहरू के हस्तक्षेत्र से समाजवादी विचारों को प्रोत्साहन मिला और उन्होंने कांग्रेस के कार्यक्रमों तथा राजनीतिक गतिविधियों को प्रभावित किया।

लोकतांत्रिक समाजवाद और नेहरू

नेहरू की समाजवाद की अवधारणा में लोकतंत्र के विचार का केन्द्रीय स्थान है। लोकतंत्र उनकी समाजवादी धारणा का प्रारम्भिक और अंतिम बिन्दु है। उनकी लोकतंत्र की अवधारणा बहु आयामी है जो राजनीतिक लोकतंत्र से क्रमशः सामाजिक लोकतंत्र तथा आर्थिक लोकतंत्र की दिशा में विकसित होती है नेहरू ने आर्थिक लोकतंत्र के विशिष्ट रूप को लोकतांत्रिक समाजवाद कहा है। नेहरू के अनुसार लोकतंत्र का वास्तविक विकास समाजवाद में ही होता है। नेहरू का मत है कि लोकतंत्र का अपरिहार्य परिणाम समाजवाद है। राजनीतिक लोकतंत्र में यदि आर्थिक लोकतंत्र सम्मिलित नहीं है तो वह अर्थ हीन है। नेहरू का लोकतांत्रिक

समाजवाद समानता के तत्व को स्वीकारने के साथ ही व्यक्ति की स्वतन्त्रता का पूर्ण समर्थक है और समुदाय का संचालन भातृत्व के आधार पर चाहता है और उनकी ऐसी मान्यता तर्क संगत है क्योंकि अन्ततोगत्वा लोकतंत्र उनकी समाजवादी धारणा का एक प्रमुख अंग है। नेहरू लोकतंत्र समाजवाद के लक्ष्य को एक लोकतांत्रिक सरकार मदद से प्राप्त करना चाहते थे

नेहरू ने समाजवाद को एक नैतिक जीवन पद्धति के रूप में स्वीकारा है अतः उन्होंने समाजवाद के महान साध्य की प्राप्ति के लिए साधन की पवित्रता के महत्व को भी स्वीकारा है। नेहरू समाजवाद की स्थापना के लिए शांतिपूर्ण संवैधानिक साधनों के पक्षधर हैं। नेहरू ने लोकतांत्रिक समाजवादी अर्थ–व्यवस्था के लिए उत्पादन व वितरण के साधनों पर केवल उस सीमा तक सार्वजनिक स्वामित्व तथा अप्रत्यक्ष नियंत्रण का समर्थन किया है जिस सीमा तक यह व्यवहारिक दृष्टि से लोकतांत्रिक समाजवाद के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो। इस दृष्टि से मिश्रित अर्थव्यवस्था को भारतीय परिस्थितियों के सर्वथा अनुरूप माना है इस प्रकार उन्होंने लोकतांत्रिक समाजवाद के आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति के संदर्भ में सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र दोनों के अस्तित्व को स्वीकारा है। उन्होंने बड़े तथा बुनियादी उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में रखने का समर्थन किया। नेहरू ने भारत में लोकतांत्रिक समाजवाद की स्थापना के लिए देश के औद्योगीकरण पर बहुत बल दिया आर्थिक असमानता को सीमित करने के लिए तथा सामाजिक सेवाओं के लिए आवश्यक धन की प्राप्ति के उद्देश्य से नेहरू ने प्रगतिशील कर प्रणाली का समर्थन किया है। सरकारी उद्योगों, सहकारी साख समीतियों तथा सहकारी बैंकों, कुटीर तथा ग्रामीण उद्योगों की उपयोगिता को भी स्वीकारा है।

नेहरू ने अर्थ व्यवस्था के विस्तार तथा समाजवादी लक्ष्यों की प्राप्ति की दृष्टि से लोकतांत्रिक आर्थिक नियोजन की प्रणाली का पूर्ण समर्थन किया। नेहरू सोवियत संघ की समाजवादी अर्थव्यवस्था की स्थापना में आर्थिक नियोजन के सिद्धान्त से बहुत प्रभावित थे उन्हीं के प्रयत्नों से पराधीन भारत में कांग्रेस पार्टी ने राष्ट्रीय नियोजन समिति नामक संगठन की स्थापना की। भारत के स्वतन्त्र होने पर नेहरू ने राष्ट्रीय योजना आयोग की स्थापना की उसकी देख–रेख ने पंच वर्षीय योजनाओं का निर्माण किया जिनके निम्न उद्देश्य रखे–

1. पूंजी व उत्पादन के बीच सामंजस्य स्थापित करना।
2. आर्थिक विकास के लिए उपलब्ध संसाधनों का नियोजित ढंग से प्रयोग करना।
3. उत्पादन की प्राथमिकताओं, मात्रा व वितरण को तय करना।
4. विकास की दृष्टि से क्षेत्रीय असन्तुलन को समाप्त करना।
5. आर्थिक विकास की दृष्टि से सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र में सहयोग बढ़ाना, रोजगार के अवसर बढ़ाना, सामाजिक सेवाओं में निरन्तर वृद्धि करना।[5]

नेहरू के अनुसार सरकार का दायित्व है कि वह सामान्य जनता की रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा की सामान्य सुविधायें प्रदान कराने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे इन सामाजिक सुविधाओं का मूल उद्देश्य सामान्य व्यक्ति को आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना होता है। लोकतांत्रिक समाजवादी सरकार की क्रय कीमत पर सार्वजनिक सेवाओं एवं सुविधाओं की वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्न करने चाहिए तथा समाज सुधार तथा सामाजिक कल्याण के कार्यक्रमों को लागू करना स्वीकारा है। बाल विवाह मद्यपान, अस्पृश्यता, जाति व्यवस्था आदि से सम्बन्धित सामाजिक सुधारों पर बल दिया। नेहरू ने लोकतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत सामाजिक आर्थिक सेवाओं व सुविधाओं का अन्तिम उद्देश्य सभी व्यक्तियों के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना, सभी के लिए न्यूनतम जीवन स्तर की व्यवस्था करना तथा यथासंभव आर्थिक समानता को संभव बनाना बताया है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जन प्रतिनिधि सरकार की प्रतिबद्धता एवं प्रबल जन समर्थन की प्रभावशाली साधन है।

संविधान द्वारा भारत को लोकतांत्रिक समाजवादी गणराज्य घोषित किया गया। संविधान में राज्य के नीति निर्देशक सिद्धान्तों के अन्तर्गत लोकतांत्रिक समाजवादी कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। नेहरू के नेतृत्व में तत्कालीन कांग्रेसी सरकारों ने लोकतांत्रिक समाजवाद की दिशा में आगे बढ़ने के लिए अनेक नीतिगत कदम उठाये और विभिन्न कार्यक्रमों को लागू किया। जैसे देशी रियासतों का भारत राज्य में विलय करके, जंमीदारी व्यवस्था का उन्मूलन करके तथा धर्म निरपेक्ष राज्य के आदर्श को अपना कर भारत में परम्परागत सामंती व्यवस्था के आधार को तोड़ा गया, प्रमुख निजी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया, सार्वजनिक क्षेत्र का निरन्तर विस्तार किया गया। निजी क्षेत्र पर सामाजिक नियंत्रण की नीति को लागू किया गया। ग्रामीण जीवन की समृद्धि के लिए सामुदायिक विकास खंड़ों की स्थापना की गई। जन भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए त्रि स्तरीय पंचायत राज व्यवस्था को लागू किया गया।[6]

समाज के पिछड़े तथा कमजोर वर्ग के जीवन स्तर को उठाने के लिए विभिन्न सामाजिक आर्थिक कल्याण के कार्यक्रमों को लागू किया गया। अनुसूचित जातियों तथा जन जातियों के सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिए आरक्षण की व्यवस्था को लागू किया गया। नेहरू ने समाजवादी नीतियों व कार्यक्रमों को लागू करने के लिए लोकतंत्र में विश्वाास रखते हुए मौलिक अधिकारों, अल्पसंख्यक की सुरक्षा, न्यायपालिका की सर्वोच्चता विपक्ष का सम्मान, प्रेस की स्वतन्त्रता तथा संघवाद को प्रोत्साहन किया। इस प्रकार उन्होंने एक सच्चे लोकतांत्रिक समाववादी के रूप में भारत में राजनीतिक लोकतंत्र तथा समाजवाद में तालमेल स्थापित करने का प्रयत्न किया और उन दोनों को एक दूसरे के अनुपूरक प्रमाणिक किया। नेहरू ने लोकतांत्रिक समाजवाद के रूप में भारतीय ढंग से जिस लोक कल्याणकारी राज्य के आदर्श को प्रस्तुत किया था वह आज भी जनमत द्वारा स्वीकृत आदर्श है और यह भारतीय राज व्यवस्था का लगभग एक स्थायी आदर्श बन चुका है। यही नेहरू के लोकतांत्रिक समाजवादी चिंतन की सबसे बड़ी सफलता है।

निष्कर्ष

इस तरह आधुनिक भारत के शिल्पकार अपने भाग्य को भारत के लोगों (गरीब किसानों, मजदूरों, कामगारों) की तकदीर का एक हिस्सा मानकर आजीवन राष्ट्र के भाग्य के उज्ज्वल बनाने में लगे रहे। आजादी के सपने को सच करने के संघर्ष की जो शुरूआत असहयोग आन्दोलन से की गई, वह समाजवाद और लोकतंत्र के रास्ते से गुजरती हुई पूरी दुनिया को एक अनन्त प्रेरणा दे गयी। अपनी ब्रिटिश शिक्षा के द्वारा जो उदारवाद, व्यक्तिवाद, समाजवाद व लोकतंत्र के आदर्शों का अध्ययन किया उन्हें भारत में आकर पारम्परिक जीवन में खोजने की कोशिश की गई। गांधी के निष्ठावान अनुयायी बनकर भारत में समाजवाद व लोकतंत्र के बीच अच्छे गुणों को मिश्रित स्वरूप देने की अद्भुत क्षमता का उपयोग किया। नेहरू ने मानव की गरिमा और प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए समाजवाद और इन्हें प्राप्त करने एवं बनाये रखने के लिए लोकतंत्र (समानता, न्याय बिना हिंसा के) अर्थात् लोकतांत्रिक समाजवाद के सिद्धान्त को भारत में व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया। यद्यपि वे अपने समतावादी लोकतांत्रिक समाजवाद के आदर्श को पूर्णतः स्थापित किये बिना ही इस संसार से विदा हो गये। परन्तु इस दुनिया को सिखाये गये मूल्यों एवं आदर्शों के लिए वे विश्व इतिहास में अमर हो गए।

अंत टिप्पणी

1. *ब्रेचर, माईकल, ''नेहरू : ए पॉलिटिकल बायोग्राफी'', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो, 1959, पृ. 73*
2. *डॉ. पाण्डेय, ब्रज कुमार और मिश्र, गिरीश, ''नेहरू और कांग्रेस की आर्थिक नीति'', राजभाषा पुस्तक प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1988, पृ. 55*
3. *अकबर, एम.जे., ''नेहरू दि मेकिंग ऑफ इण्डिया'', दि लॉटस कलेक्शन, रोली बुक्स प्रा.लि., नई दिल्ली, 2015, पृ. 16*
4. *सहगल, नयनतारा (सम्पादित), ''नेहरूज इण्डिया ऐसे ऑन दि मेकर ऑफ ए नेशन'' स्पीकिंग टाईगर पब्लिशिंग प्रा.लि., नई दिल्ली, 2015, पृ. 129*
5. *गुहा, रामचन्द्र (अनु. सुशांत झा), ''भारत नेहरू के बाद'', पेंगुइन बुक्स इण्डिया प्रा.लि., हरियाणा, 2012, पृ. 118*
6. *घोष, ए.वी. (सम्पादित), ''जवाहरलाल नेहरू ए क्रिटीकल ट्रिब्यूट'', पी.जी. मनकतला एण्ड सन्स प्रा. लि., बोम्बे, 1965, पृ. 87*